IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

छात्रावास एवं परिवार में रहने वाले विद्यार्थियों की स्व–अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन

सुमन मीणा
षोधार्थी

षिक्षा विभाग, जयनारायण व्यास विष्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान

डॉ. (श्रीमती) कीर्ति सोलंकी

षोध निर्देषिका

व्याख्याता, षाह गोवर्धनलाल काबरा षिक्षक षिक्षा महाविद्यालय (सी.टी.ई.), जोधपुर, राजस्थान

सारांष

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देष्य छात्रावास एवं परिवार में रहने वाले विद्यार्थियों की स्व–अवधारणा का लैंगिक संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। न्यादष के लिए जयपुर जिले के 600 विद्यार्थियों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। इस षोध कार्य में आंकडों का संकलन करने के लिए डॉ. राज कुमार सारस्वत द्वारा निर्मित संबंधी स्व–अवधारणा परीक्षण का प्रयोग किया गया। आंकडों का विश्लेषण मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी–परीक्षण के द्वारा किया गया। प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि छात्रावास एवं परिवार में रहने वाले छात्र एवं छात्राओं की स्व–अवधारणा में सार्थक अंतर है।

मुख्य षब्दः– छात्रावास, स्व–अवधारणा।

प्रस्तावना

बालकों के व्यक्तित्व में परिवार के संस्कार सम्मिलित होते हैं तथापि परिवेष का भी छात्रों के जीवन पर अधिक प्रभाव पड़ता है। घर, कुटुम्ब या परिवार मानव समाज की प्राचीनतम एवं आधारभूत इकाई है। परिवार माता–पिता और उनकी संतानों से बनता है। परिवार का षक्षिक महत्व इसलिए भी है क्योंकि परिवार ही बालकों की पहली पाठषाला होतो है। जब औपचारिक रूप से स्कूल अस्तित्व में नहीं आए होंगे तब बालक परिवार में ही परिवार जनों द्वारा षिक्षित किए जाते हैं। परिवार ही बालकों की अवधारणा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

विद्यार्थी की अवधारणा उसके व्यक्तित्व को तथा उसके द्वारा प्रदषित आदतों को एक निश्चित दिषा प्रदान करती है। अवधारणा अधिगम का मूल आधार है। अवधारणा का निर्माण संवेदना तथा प्रत्यक्षीकरण की क्रियाओं के द्वारा प्राप्त अनुभूतियों से होता है। सम्प्रत्यय एक जैसी विषषता वाले उद्दीपकों का एक समूह है, ये उद्दीपक व्यक्ति, वस्त, स्थान अथवा घटना कोई भी हो सकता है। परन्तु यह ध्यान रहे कि अवधारणा कोई विषिष्ट उद्दीपक नहीं होता वरन् उद्दीपकों का एक समूह होता है सामान्य अर्थों में सम्प्रत्यय ज्ञानात्मक संगठन की एक व्यवस्था अथवा गुणों का एक वर्ग है जो वर्तमान उत्तेजना के सम्बन्ध मं बीते अनुभवों से कुछ विषिष्ट लक्षणों को उपस्थित करता है अर्थात् अवधारणा से किसी वर्ग में पाई जाने वाली वस्तुओं तथा उनके सामान्य गुणों का बोध होता है। संक्षेप में अवधारणा विविध पदार्थों, घटनाओं, स्थान और स्थितियों में समानता का प्रतिनिधित्व करने वाली एक प्रक्रिया है। अवधारणा समान विषषताओं वाले उद्दीपकों का एक वर्ग होता है, ये उद्दीपक पदार्थ, घटना या मनुष्य कोई भी हो सकता है।

स्व–अवधारणा को स्वयं के बारे में व्यक्ति की धारणा, उसके षारीरिक आत्म–व्यक्तित्व चरित्र, गुणों और उसकी अपनी स्थिति की धारणा के रूप में परिभाषित किया गया है। जिसे उसने अनुभव के माध्यम से प्राप्त किया है। स्व–अवधारणा विरासत में नहीं मिलती है; बल्कि, यह

समय के माध्यम से एक व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक रूप या छवि के हिस्से के रूप में विकसित होता है।

अध्ययन का औचित्य

परिवार में ही बालक नैतिक एवं सामाजिक गुणों को सीखता है। यह बालक के समाजीकरण का प्रमुख आधार है। षक्षिक दृष्टि से परिवार का बालक पर बहुत प्रभाव पड़ता है। किसी भी बालक के लिए मूल–प्रवृत्तियों की संतुष्टि और विकास परिवार के वातावरण में ही सम्भव है। बालक परिवार के सौहार्दपूर्ण वातावरण में रहकर ही सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को ग्रहण करता है। बालक में सत्यता, स्नेह, दया, करूणा, सौहार्द, सदाचार और सहयोग जैसे मानवीय गुणों का निरन्तर विकास होता जाता है। प्रायः यह देखा जाता है कि प्रत्येक क्षेत्र मे सफल होने के लिए बालक के परिवार का वातावरण उत्तम होना आवष्यक है। पारिवारिक वातावरण के कारण ही एक बालक अपने जीवन में श्रेष्ठ मूल्यों को आत्मसात करते हुए जीवन में विकास की ओर अग्रसर होता है। इसी को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन मं छात्रावास एवं परिवार में रहने वाले विद्यार्थियों की स्व–अवधारणा में अंतर को जानने का प्रयास किया गया है।

समस्या कथन

छात्रावास एवं परिवार में रहने वाले विद्यार्थियों की स्व–अवधारणा का अध्ययन

षोध के उद्देश्य

1 छात्रावास एवं परिवार में रहने वाले छात्रों के स्व–अवधारणा का अध्ययन करना।
2 छात्रावास एवं परिवार में रहने वाली छात्राओं की स्व–अवधारणा का अध्ययन करना।

षोध की परिकल्पनाएँ

1 छात्रावास एवं परिवार में रहने वाले छात्रों के स्व–अवधारणा में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

2 छात्रावास एवं परिवार में रहने वाली छात्राओं की स्व–अवधारणा में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

षोध विधि – इस षोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादष – इस षोध कार्य में न्यादष के लिए 600 विद्यार्थियों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है, जिसमें से 300 विद्यार्थी छात्रावास में एवं 300 विद्यार्थी परिवार में रहने वाले हैं।

उपकरण – इस षोध कार्य में आंकडों का संकलन करने के लिए डॉ. राज कुमार सारस्वत द्वारा निर्मित संबंधी स्व–अवधारणा परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी विधि – आंकडों का विष्लेषण मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी–परीक्षण के द्वारा किया गया।

विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना 1 – छात्रावास एवं परिवार में रहने वाले छात्रों के स्व–अवधारणा में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारणी : 1

छात्रावास एवं परिवार में रहने वाले छात्रों के स्व–अवधारणा में अंतर

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मान	परिणाम
छात्रावास में रहने वाले छात्र	150	165.79	23.58	5.89	अस्वीकृत
परिवार में रहने वाले छात्र	150	183.35	27.84		

व्याख्या –

उपर्युक्त सारणी 1 में छात्रावास एवं परिवार में रहने वाले छात्रों के स्व–अवधारणा में सार्थक अंतर को दर्षाती है। सारणी में प्रदषित परिणामों से यह स्पष्ट है कि छात्रावास एवं परिवार में रहने वाले छात्रों के स्व–अवधारणा का मध्यमान क्रमषः 165.79 व 183.35 और प्रमाप विचलन कमषः 23.58 व 27.84 है। मध्यमान एवं प्रमाप विचलन की सहायता से टी–परीक्षण की गणना करने पर मान 5.89 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंष 298 के 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका के मान 1.97 से अधिक है। अतः ष्न्य परिकल्पना ''छात्रावास एवं परिवार में रहने वाले छात्रों के स्व–अवधारणा में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है'' अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना 2 – छात्रावास एवं परिवार में रहने वाली छात्राओं की स्व–अवधारणा में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारणी : 2

छात्रावास एवं परिवार में रहने वाली छात्राओं की स्व–अवधारणा में अंतर

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मान	परिणाम
छात्रावास में रहने वाली छात्राएँ	150	169.61	21.24	4.17	अस्वीकृत
परिवार में रहने वाली छात्राएँ	150	180.28	23.09		

व्याख्या –

उपर्युक्त सारणी 2 में छात्रावास एवं परिवार में रहने वाली छात्राओं की स्व–अवधारणा में सार्थक अंतर को दर्षाती है। सारणी में प्रदषित परिणामों से यह स्पष्ट है कि छात्रावास एवं परिवार में रहने वाली छात्राओं की स्व–अवधारणा का मध्यमान क्रमषः 169.61 व 180.28 और प्रमाप विचलन कमषः 21.24 व 23.09 है। मध्यमान एवं प्रमाप विचलन की सहायता से टी–परीक्षण की गणना करने पर मान 4.17 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंष 298 के 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका के मान 1.97 से अधिक है। अतः ष्न्य परिकल्पना ''छात्रावास एवं परिवार में रहने वाली छात्राओं की स्व–अवधारणा में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है'' अस्वीकृत होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल, जे.सी. (2010). *षिक्षा के दार्षनिक, सामाजिक एवं आर्थिक आधार.* आगराः अग्रवाल पब्लिकेषन।
- ओड, एल. के. (2004). *षिक्षा की दार्षनिक एवं सामाजषास्त्रीय पृष्ठभूमि.* जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
- बिहारी लाल, रमन. (1997). *षिक्षा के दार्षनिक एवं समाजषास्त्री सिद्धांत.* उत्तरप्रदेष।
- बेस्ट, जॉन डब्ल्यू. (1963). *रिसर्च इन एजूकेषन.* नई दिल्ली : प्रेन्टाइस हॉल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड।
- गैरेट एच. ई. (1981). *मनोविज्ञान एवं षिक्षा में सांख्यिकी,* दषम् संस्करण, बीएफ. एण्ड सन्स बॉम्बे।
- गुप्ता एस पी. और गुप्ता उमा (1999). *सांख्यिकी के सिद्धान्त,* नई दिल्लीः सुलतान चन्द एण्ड सन्स दरियागंज।
- सरीन और सरीन अंजनी (2007). *षैक्षिक अनुसंधान विधियाँ,* आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
- षर्मा, आर. ए. (2003). *षिक्षा अनुसंधान,* आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।